

  
**SEVA-DHAM Plus**  
Since 1994

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2012-14  
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473  
Date of Post : 27-28

.....The Wellness Center  
(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)

**Relax Your Body, Mind & Soul In A Spiritual Environment**

Truly rejuvenating treatment packages through  
Relaxing Traditional Kerala Ayurvedic Therapies



KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013  
Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-26821348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878  
Website : www.sevadhama.info E-mail : contact@sevadhama.info

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)  
के.एच.-57 जैन आश्रम, रिंग रोड, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे,  
पो. बो.-3240, नई दिल्ली-110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस-1  
से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित  
36 पृष्ठ

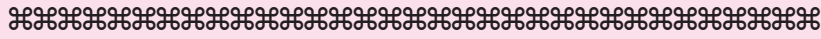
मूल्य 5.00 रुपये  
दिसम्बर, 2014

# रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

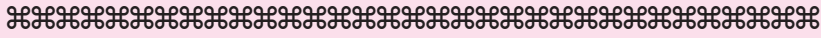


सन् 2014 को बिदाई देती हुई  
मानव मंदिर गुरुकुल की बालिकाएं



# रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका



वर्ष : 14 अंक : 12 दिसम्बर, 2014

इस अंक में	पृष्ठ संख्या
01. आर्ष-वाणी	- 5
02. बोध-कथा	- 5
03. शाश्वत स्वर	- 6
04. उद्बोधन	- 7
05. चिंतन-चिरंतन	- 11
06. भजन	- 13
07. मनन-मंथन	- 14
08. खुदाराम	- 17
09. अथ झाड़ू-कथा	- 21
10. चुटकूले	- 23
11. वेताल पच्चीसी	- 24
12. गीतिका	- 25
13. स्वास्थ्य	- 26
14. बोलें-तारे	- 29
15. ईमानदारी का सबूत	- 31
16. समाचार-दर्शन	- 32
17. झलकियां	- 34

**: मार्गदर्शन :**

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

**: संयोजना :**

साध्वी वसुमती  
साध्वी पद्मश्री

**: परामर्शक :**

श्रीमती मंजुबाई जैन

**: सम्पादक :**

श्रीमती निर्मला पुगलिया

**: व्यवस्थापक :**

श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये

आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

**: प्रकाशक :**

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)

पोस्ट बॉक्स नं. : 3240

सराय काले खाँ बस टर्मिनल के

सामने, नई दिल्ली - 110013

फोन नं.: 26315530, 26821348

Website: www.rooprekha.com

E-mail: contact@manavmandir.info

## रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका

डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेन् प्रेंसिस्को

डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास

डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क

श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी

श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी

श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैकाक

श्री सुरेश सुरेखा आवड़, शिकागो

श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना

श्री कालू राम जतन लाल बरडिया, सरदार शहर

श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली

श्री कालूराम गुलाब चन्द बरडिया, सूरत

श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर

श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली

श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री माणेराम अग्रवाल, दिल्ली

श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली

श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्व. शुभकरण बुच्चा, सूरत

श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा

श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार

श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब

श्री पुरुषोत्तमदास बाबा गोयल, सुनाम, पंजाब

श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,

श्री अशोक कुमार सुनीता चोरडिया, जयपुर

श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़

श्री देवकिशन मून्डडा विराटनगर नेपाल

श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र

श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला

श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब

श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास

श्री चैनरूप सुशील कुमार पारख, हनुमानगढ़

श्री श्यामलाल वीणादेवी सातरोदिया, हिसार

श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन

श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी

श्री प्रवीण लता मेहता ह्युष्टन

श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा

श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार

श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट

श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर

डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई

श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनू

श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम

श्रीमती चंपाबाई भंसाळी, जोधपुर

श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद

श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली

डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा

श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़

श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर

श्री देवराज सरोजबाला, हिसार

श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार

श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद

श्री रमेश उषा जैन, नोएडा

श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा

श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले

श्री संपतराय दसानी, कोलकाता

लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर

श्री आदीश कुमार जी जैन, दिल्ली

मास्टर श्री वैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार

श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला

श्री सुरनेश कुमार सिंगला, सुनाम, पंजाब

श्री बुधमल राजकरण, तेजकरण सिंघी, सरदार शहर

श्रीमती लक्ष्मीदेवी चिंडालिया, सरदार शहर

हियाहारा मियाहारा, अप्पाहारा य जे नरा  
नते वेज्जा चिकिच्छति, अप्पाणं ते चिकिच्छगा।

-आगम-पद

जो व्यक्ति हितकारी, परिमित और अल्पाहार लेते हैं। वे स्वयं ही अपने चिकित्सक है उन्हें दूसरे वैद्यों की जरूरत नहीं है।

### तीन प्रश्न

एक राजा जिस साधु-संत से मिलता, उनसे तीन प्रश्न पूछता। पहला- कौन व्यक्ति श्रेष्ठ है? दूसरा- कौन सा समय श्रेष्ठ है? और तीसरा- कौन सा कार्य श्रेष्ठ है? सब लोग उन प्रश्नों के अलग-अलग उत्तर देते, किंतु राजा को उनके जवाब से संतुष्ट नहीं होती थी। एक दिन वह शिकार करने जंगल में गया। इस दौरान वह थक गया, उसे भूख-प्यास सताने लगी। भटकते हुए वह एक आश्रम में पहुंचा। उस समय आश्रम में रहने वाले संत आश्रम के फूल-पौधों को पानी दे रहे थे। राजा को देख उन्होंने अपना काम फौरन रोक दिया। वह राजा को आदर के साथ अंदर ले आए। फिर उन्होंने राजा को खाने के लिए मीठे फल दिए। तभी एक व्यक्ति अपने साथ एक घायल युवक को लेकर आश्रम में आया। उसके घावों से खून बह रहा था। संत तुरंत उसकी सेवा में जुट गए। संत की सेवा से युवक को बहुत आराम मिला। राजा ने जाने से पहले उस संत से भी वही प्रश्न पूछे। संत ने कहा- 'आप के तीनों प्रश्नों का उत्तर तो मैंने अपने व्यवहार से अभी-अभी दे दिया है।' राजा कुछ समझ नहीं पाया। उसने निवेदन किया, 'महाराज, मैं कुछ समझा नहीं। स्पष्ट रूप से बताने की कृपा करें।' संत ने राजा को समझाते हुए कहा- 'राजन् जिस समय आप आश्रम में आए मैं पौधों को पानी दे रहा था। वह मेरा धर्म है। लेकिन आश्रम में अतिथि के रूप में आने पर आपका आदर सत्कार करना मेरा प्रधान कर्तव्य था। आप अतिथि के रूप में मेरे लिए श्रेष्ठ व्यक्ति थे। पर इसी बीच आश्रम में घायल व्यक्ति आ गया। उस समय उस संकटग्रस्त व्यक्ति की पीड़ा का निवारण करना भी मेरा कर्तव्य था, मैंने उसकी सेवा की और उसे राहत पहुंचाई। संकटग्रस्त व्यक्ति की सहायता करना श्रेष्ठ कार्य है। इसी तरह हमारे पास आने वालों के आदर सत्कार करने का, उनकी सेवा-सहायता करने का समय ही श्रेष्ठ है।' राजा संतुष्ट हो गया।

### लालच से घृणा पैदा होती है

हम यह कह सकते हैं कि लालच घृणा की जननी है। घृणा शब्द का अर्थ व्यक्तियों, जाति, धर्म, रंग और पदार्थों के साथ नापसंदगी की गहरी भावना से है। घृणा गुस्से या लालच या प्रतिशोध या अन्य किसी कारण से पैदा होती है। कभी-कभी व्यक्ति को स्वयं के प्रति नापसंदगी के कारण भी घृणा पैदा हो जाती है। यदि मैं किसी के प्रति प्रतिशोध की भावना रखता हूं तो मैं उसे नुकसान पहुंचाऊं या न पहुंचाऊं किन्तु मैं सुनिश्चित रूप से स्वयं को नुकसान अवश्य पहुंचा रहा हूं। बहुत से लोग अपने मन में अन्य लोगों के प्रति ईर्ष्या का भाव रखने के कारण शारीरिक व्याधियों से पीड़ित हो जाते हैं। एक महिला घुटनों के जोड़ों में हड्डियों के दर्द से परेशान थी। किसी भी औषधि से लाभ नहीं हो रहा था। दर्द बढ़ता ही जा रहा था कि एक संत ने उससे पूछा- 'क्या तुम्हें किसी से ईर्ष्या है?' पहले तो वह महिला हिचकिचाई परंतु बाद में उसने उत्तर दिया, 'मेरे मन में मेरी अपनी बहन के प्रति ईर्ष्या की भावना है क्योंकि वह मेरे साथ ठीक से व्यवहार नहीं करती।' इस पर संत ने उससे कहा- 'जब तुम उसे माफ कर दोगी और उसके साथ शांतिपूर्ण सम्बंध स्थापित कर लोगी तो तुम्हारा दर्द गायब हो जाएगा।' पहले तो उसे यह काम काफी कठिन लगा। बाद में वह अपनी बहन से मिली, उसे गले से लगाया और बोली- 'जो बीत गया सो बीत गया! आओ अब हम जीवन का एक नया अध्याय शुरू करते हैं।' उसके आश्चर्य की सीमा नहीं थी क्योंकि उसका दर्द धीरे-धीरे गायब हो गया। घृणा एक अग्नि है जो आपके भीतर ही भीतर जलती रहती है। यह आपकी शांति और खुशियों को जलाकर राख कर देती है। जिस व्यक्ति के हृदय में लालच व नफरत की भावना भरी है उसे उसके घर में, उसके कार्यस्थल पर तथा समाज में भी कोई पसंद नहीं करता। जब हम किसी व्यक्ति से घृणा करते हैं तो हमारा ध्यान उतना ही केंद्रित होता है जितना प्यार करते समय। घृणा लालच के कारण जन्म लेती है और बाद में घृणा एक दुष्प्रवृत्ति में बदल जाती है। लालच की चर्चा वास्तव में उसी समय की जानी चाहिए जब उसकी आपूर्ति सीमित हो। इसका एक मात्र साधन है कि सबसे प्यार करो और जो कुछ आपके पास है उसमें सबसे भागीदारी करो। यह एक ऐसी भावना है जो प्राकृतिक रूप से मन से आती है। दूसरों का जीवन सरल और अधिक सुखमय बनाने के लिए यह निष्ठापूर्ण इच्छा की खुशबू है। यह भावना प्रेम से, दूसरों को कुछ देने की इच्छा से तथा उन्हें आनंदित देखने की इच्छा से पैदा होती है। इसके बाद आपको मानसिक शांति प्राप्त होगी। अपने आपको सहृदयता की ओर धकेलिए मत, इसके लिए आपके एक अंतर्मन से आवाज उठनी चाहिए। सहृदयता मात्र एक निर्णय नहीं है, यह तो जीवन शैली है। इस दुनिया में दो तरह के लोग हैं, देने वाले और लेने वाले। लेने वाले अच्छा खा सकते हैं परंतु देने वाला हमेशा बेहतर नींद सोता है। -निर्मला पुगलिया

## क्या मानव जीवन सचमुच सर्व-श्रेष्ठ है?



### -पूज्य गुरुदेव की कलम से

मनुष्य-भव की महिमा सभी धर्म-ग्रंथों तथा सभी महापुरुषों ने गाई है। भगवान महावीर ने कहा- प्राणी के लिए चार अंग दुर्लभ हैं। उनमें पहला है- माणुसत्तं- मनुष्य का जीवन। वैदिक ऋषियों ने कहा- न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्- मनुष्य जीवन से अधिक श्रेष्ठ यहां कुछ भी नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं- बड़े भाग मानुष तन पावा- बड़े भाग्य से मनुष्य-शरीर मिलता है। इस सारे महिमा-गान का कारण शायद यही होगा

कि अन्य सारे प्राणि-जगत की अपेक्षा मनुष्य के पास अधिक विकसित चेतना है, प्रखर बुद्धि कौशल है, भावों की अभिव्यक्ति के लिए समर्थ वाणी है। निरसंदेह मानव-जीवन के साथ जुड़ा यह शक्ति-सामर्थ्य उसे समस्त प्राणि-जगत से सर्वोपरि आसन प्रदान करता है। किन्तु मेरी सोच में मनुष्य को महामहिम तब माना जाना चाहिए जब प्रकृति से प्राप्त इस शक्ति-सामर्थ्य का उपयोग वह अपनी स्वार्थ-साधना के लिए नहीं, परार्थ और परमार्थ-साधना में करे। यहां यह सोचना जरूरी है ऐसे कितने व्यक्ति होंगे जो इस शक्ति-सामर्थ्य का उपयोग प्राणि-जगत के हित, सुख और कल्याण के लिए करते हों?

आज जल, थल और नभ का सारा पशु-पक्षी-जगत इस आदमी से भयभीत है। पेड़-पौधे, नदियां, पर्वत, जंगल इस आदमी की स्वार्थमयी करतूतों से भयंकर पीड़ा-दंश झेल रहे हैं। आदमी अपने सर्वश्रेष्ठ होने की घोषणा चाहे कितनी ही करे, अगर शेष प्राणि-जगत के पास अपनी पीड़ा को अभिव्यक्ति देने वाली भाषा होती तो वह सर्व-सम्मति से यही कहता- इस आदमी से अधिक स्वार्थपरस्त खतरनाक प्राणी इस धरती पर कोई नहीं है।

तमिल भाषा में एक महान् ग्रंथ है, जिसका नाम है तिरुक्कुरल। इसको तमिल साहित्य में तमिल-वेद भी कहा जाता है। इसके रचयिता हैं महान् संत तिरुवल्लुवर। आप अगर कन्याकुमारी जाएंगे तो विवेकानन्द रॉक मेमोरियल की निकटस्थ चट्टान पर संत तिरुवल्लुवर की विशाल प्रतिमा के भी दर्शन होंगे। संत तिरुवल्लुवर का समय हजारों वर्षों पूर्व माना जाता है। उन्होंने आदमी की सर्वोपरि महिमा पर करारा व्यंग्य करने वाली एक कथा का उल्लेख किया है।

कहते हैं एक बार जंगल में पशु-पक्षियों के संसद्-सत्र में चर्चा का विषय था- धरती पर सर्व-श्रेष्ठ प्राणी कौन? बन्दर ने अपना-प्रस्ताव रखा- मेरी समझ में धरती पर सर्व-श्रेष्ठ प्राणी है मनुष्य। हम सब प्राणियों से उसके पास अधिक विकसित चेतना है, अधिक बुद्धि-कौशल है, समर्थ वाणी है, इसीलिए पूरी धरती पर उसका साम्राज्य है। इसलिए सर्व-श्रेष्ठ प्राणी मनुष्य को ही मानना चाहिए। अन्य सभी पशु-पक्षियों ने बंदर के प्रस्ताव का समर्थन कर दिया। कहते हैं तभी कौवे ने अपना विरोध प्रकट करते हुए कहा- मेरी सोच में आदमी सबसे श्रेष्ठ नहीं, किंतु अधम और निकृष्ट प्राणी है जो अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए अधर्म और पाप-अन्याय का रास्ता लेने में पल भर भी देर नहीं लगाता है। इसलिए इस प्रस्ताव के विरोध में मैं अपना मत देता हूं।

बन्दर कौवे के इस विरोध से नाराज हो गया। उसने सभी सभासदों से कहा- यह कौवा हमारे हर प्रस्ताव को सर्व-सम्मति से पारित नहीं होने देता है। इसलिए मैं कौवे से छह वर्ष के लिए संसद्-सदस्यता छीनने का प्रस्ताव करता हूं। सभी सभासदों ने बन्दर के इस प्रस्ताव पर सर्व-सम्मत मुहर लगा दी। उसके पश्चात् आदमी के सर्व-श्रेष्ठ प्राणी का प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पारित हो गया।

थोड़े समय पश्चात् पेड़ पर बैठे उस बन्दर ने देखा, एक आदमी बड़े जोर से दौड़ता हुआ उसकी ओर आ रहा है। उसके ठीक पीछे बन्दर ने एक शेर को भी आते हुए देखा। बन्दर को सारा माजरा समझ में आ गया। आदमी पेड़ के पास बन्दर से बोला- मैं आपका शरणागत हूं। शेर से रक्षा करके मुझे प्राणों की भिक्षा दीजिए। बन्दर ने आदमी को पेड़ पर शरण देकर प्राण-रक्षा का वचन दे दिया।

पीछे से शेर भी पेड़ के नीचे आ पहुंचा। उसने बन्दर से कहा- हम दोनों जंगल के प्राणी हैं। एक दूसरे के सुख-दुःख में काम आना हमारा फर्ज बनता है। मैं तीन दिनों से भूखा हूं। यह आदमी मेरा शिकार है। तुम इसे नीचे धकेल दो, ताकि मैं अपनी भूख शांत कर सकूं।

बन्दर बोला- तुम्हारा कहना सौ पैसे सच है। हम जंगल के वासी हैं। एक-दूसरे के सुख-दुःख में हमें काम आना ही चाहिए। किन्तु यह आदमी मेरे शरणागत है। शरणागत की रक्षा करने को परम धर्म माना गया है। इसलिए इसे मैं नीचे नहीं धकेल सकता। बन्दर के इस उत्तर से आदमी ने चैन की सांस ली।

अब पेड़ के ऊपर बन्दर और आदमी बैठे हैं। पेड़ के नीचे शेर अपना आसन जमाये बैठा है। थोड़ा समय बीता। बन्दर की आंखों में नींद की झपकी आ गई। अब शेर ने आदमी से कहा- देखो भैया आदमी मैं तीन दिनों से भूखा हूं। मेरा मकसद मेरी भूख शांत करना

है भूख शांत बन्दर से हो या आदमी से। मुझे इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता। अभी यह बन्दर नींद में निश्चिंत है। तुम इसे नीचे धकेल दो। मैं इससे अपनी भूख शांत करके चला जाऊंगा। तुम आराम से अपने घर चले जाना। फिर यह भी सोचो, अगर बन्दर को मैं खा लेता हूं, इसके पीछे इसके लिए कोई रोने-धोनेवाला नहीं है। तुम यदि मेरा भोजन बन जाते हो तो तुम्हारा सारे परिवार पर दुःखों का पहाड़ टूट जाएगा। इसलिए सब तरह से सोचकर बन्दर को नीचे धकेल दो।

आदमी शेर के प्रस्ताव पर राजी हो गया। हम देखते ही हैं आदमी अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए अपने नियम-धर्म छोड़कर कुछ भी अनर्थ करने को तैयार हो जाता है। वह धीमे-से दबे पांव बन्दर के पास पहुंचा। और निद्राधीन बन्दर को जोर से नीचे की ओर धकेल दिया। गिरते-गिरते बन्दर की आंख खुल गई। उसके हाथ में नीचे की टहनी आ गई। दूसरे ही क्षण छलांग भरते हुए वह वापस पेड़ की ऊंची डाली पर आ गया।

अब शेर बोला- देख लिया बन्दर तूने, शरणागत-धर्म मानकर तुम जिसकी रक्षा कर रहे थे, उसी ने तुम्हारे साथ कैसा विश्वास-घात किया है। अब तो तुम्हारे समझ में आ जाना चाहिए यह मनुष्य दया-योग्य नहीं है। बन्दर ने कहा- शेर, तुम ठीक कह रहे हो। इसके इस कृत्य से मेरे विश्वास को बहुत बड़ी ट्रेस लगी है। इसका यह आचरण दंडनीय है, क्षमा-योग्य नहीं है। फिर भी मैं शरणागत-धर्म का पालन करते हुए इसे नीचे नहीं फेंक सकता। क्योंकि आदमी ने चाहे अपने नियम-धर्म को छोड़कर पतन का रास्ता ले लिया हो। किंतु हम जानवर आज भी इतने धर्म-पतित नहीं हुए हैं इसलिए मैं धर्म-विरुद्ध आचरण नहीं कर सकता। बन्दर ने आगे कहा- हां, मैं इतना अवश्य करूंगा अगले संसद-सत्र में आदमी के सर्व-श्रेष्ठ होने के मेरे प्रस्ताव को मैं वापस तो लूंगा ही, संसद से निष्कासित कौवे को ससम्मान वापस लेने का प्रस्ताव भी रखूंगा। कौवे का कथन बिल्कुल सच था आदमी से अधिक स्वार्थपरस्त, अविश्वसनीय तथा खतरनाक प्राणी इस धरती पर और कोई नहीं है।

हजारों वर्ष पूर्व लिखी यह कथा आज के मनुष्य पर भी क्या उतनी ही सटीक नहीं बैठती है? बल्कि सचाई तो यह है विज्ञान-सभ्यता के नाम पर आज आदमी ने प्रकृति के साथ खिलवाड़ और छेड़छाड़ की सारी सीमाओं को तोड़ दिया है। चिंता-जनक यह है आदमी इसको विकास की ओर बढ़ते कदम मान रहा है-

**आप सोचते हैं हमारे कदम विकास की ओर बढ़ रहे हैं  
हमें लगता है हमारे कदम विनाश की ओर बढ़ रहे हैं  
खिसकती जा रही है हमारे पावों तले की जमीन  
हमें भ्रम है हमारे कदम आकाश की ओर बढ़ रहे हैं।**

अपने छोटे-छोटे स्वार्थ-सुखों के लिए क्या आज परिवार नहीं टूट रहे हैं? माता-पिता, पति-पत्नी, भाई-भाई के बीच क्या दीवारें नहीं खड़ी हो रही हैं? एक भक्त किसी संत-महात्मा के पास पहुंचा। बोला- मुझे एक अमीर बनने का आशीर्वाद दीजिए। संत-पुरुष बोले- बोल, पैसा चाहिए या परिवार की शांति चाहिए। पैसा चाहिए या परिवार का प्रेम चाहिए। क्योंकि पैसा और शांति, पैसा और प्रेम दोनों का एक साथ सहवास संभव नहीं है।

पूरब ने सदा परिवार-जीवन को सर्वोपरि माना। इसीलिए कहा-

**अयं निजः परोवेति, गणना लघु चेतसाम्  
उदार चरितानां तु, वसुधैव कुटुम्बकम्।**

यह मेरा, यह पराया, यह छोटे दिलों की सोच है। उदार सोच वाला व्यक्ति पूरी वसुधा को ही अपना परिवार मानता है।

पूरब ने पूरी वसुधा को परिवार माना। पश्चिम ने पूरी वसुधा को बाजार माना। बाजार-सोच में अपना कोई नहीं होता है। पैसा ही सब कुछ होता है। इसलिए भौतिक समृद्धि के बाद भी पश्चिम मानसिक रूप से सदा बीमार रहा। भौतिक समृद्धि के अभाव में भी पूरब सदा शहंशाह रहा-

**अमीरी की तो ऐसी की अपना घर लुटा बैठे,  
फकीरी की तो ऐसी की उसके घर में जा बैठे।**

आज दुर्भाग्य-वश पश्चिम की सोच पूरब की परिवार-संस्कृति को तहस-नहस करने जा रही है। पूरब की सोच पर भी बाजार-संस्कृति हावी होती जा रही है। परिवार-संस्कृति में प्रेम, सद्भावना और सेवा प्रमुख होती है। बाजार-संस्कृति में अपना स्वार्थ, अपना सुख प्रमुख होता है। परिणामतः सर्वश्रेष्ठ मानव-जीवन पाकर भी आदमी अशांत, अस्वस्थ तथा तनावग्रस्त जीवन जीने को मजबूर है-

**धन के लिए पहले तन को कुर्बान कर देते हैं  
फिर तन के लिए धन को कुर्बान कर देते हैं  
तन और धन दोनों की जद्दो-जहद में  
हम पूरे जीवन को कुर्बान कर देते हैं।**

जरा गंभीरता से सोचें, सर्व-श्रेष्ठ मानव जीवन की महिमा को समझें। स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ और परमार्थ का जीवन अपनाएं। तभी हम मानव-जीवन की सर्वश्रेष्ठता और धन्यता का अनुभव कर सकेंगे। अगर ऐसा नहीं हुआ तो यह बाजार-संस्कृति पूरी परिवार-संस्कृति को निगल जाने वाली है।

## आत्म-जागरण की दिशा



### ○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

बीज का दृश्य-रूप वृक्ष है। हम वृक्ष को देखते हैं। वृक्ष के विस्तार में बीज का जो बलिदान है उस पर ध्यान नहीं दिया जाता। हम वृक्ष की सुरक्षा करते हैं क्योंकि वह विराट् है। हम बीज की उपेक्षा कर देते हैं, क्योंकि वह सूक्ष्म है। हमन नहीं सोचते, सूक्ष्म सुरक्षित है तो वह विराट् तो अपने आप ही हो जायेगा। दुनिया की आंखें स्थूल को पकड़ती हैं, सूक्ष्म को नहीं। फूल को सींचती हैं, जड़ को नहीं। यही कारण है कि जड़ मुरझा रही है, फूल गिरते

जा रहे हैं। अध्यात्म समग्र विकासों की जड़ है। अध्यात्म को नकार कर बौद्धिक, मानसिक और शारीरिक विकास का मूल्य मात्र छिलके का मूल्य है। गुदे को खोकर छिलके को रखने वाला मूर्ख है।

आज व्यक्ति बौद्धिक कुंठा और मानसिक विकृति का शिकार है। अध्यात्महीन व्यक्ति न बुद्धिवाद से समाधान पा सकता है, न मानसिक विकास से तृप्त हो सकता है। बिना आत्म-संतुलन के बौद्धिक विकास व्यक्ति को विक्षिप्त बना देता है और मानसिक विकास भावुक। विक्षिप्तता और भावुकता दोनों ही स्वस्थता के प्रतीक नहीं हैं। स्वस्थता का निर्वाध पथ है आत्म-जागरण। हमारा विकास-क्रम सर्वथा उलटा चल रहा है। विकास होना चाहिए नीचे से, होता है ऊपर से। हम सबसे पहले मस्तिष्क को विकसित करते हैं। हृदय हमारे विकास का दूसरा आधार है। नाभि का क्रम तीसरा है। विकास का क्रम भीतर से होना चाहिए और हम प्रारम्भ करते हैं बाहर से। हम जितना शारीरिक विकास की ओर ध्यान नहीं देते उतना विचारों के विकास की ओर देते हैं। विचार हमारी आत्मा का सबसे दूरवर्ती सम्बन्धी है।

विचारों के विकास ने हमें चिन्तनशील और तर्कशील बना दिया है। मानसिक विकास ने हमें आग्रहशील बना दिया है। तर्कशीलता और आग्रह दोनों ही सत्य तक पहुंचने के मार्ग नहीं हैं। सत्य तक पहुंचने के लिए आत्म-बल चाहिए, संकल्प-शक्ति चाहिए। साहस और दृढ़ता चाहिए। ये सब आत्म-जागरण से उपलब्ध होते हैं। हमारा विचार-पक्ष जितना प्रबल है, भाव-पक्ष जितना सशक्त है, संकल्प-बल भी उतना ही सुदृढ़ होना चाहिए।

मूल की उपेक्षा करने शाखाओं के प्रति हमारी जो जागरूकता है, वह हमारे समग्र जीवन को अस्त-व्यस्त कर रही है। मस्तिष्क और हृदय की शक्तियों का सम्यक् परिणाम नहीं आ रहा है। उसका मूलभूत कारण अध्यात्म की उपेक्षा है।

आत्मा का वास्तविक रूप वह है जहां अनन्त शक्तियों का स्रोत बहता है, जहां अखण्ड आत्मानन्द झरता है, जहां आत्म-विश्वास और दृढ़ संकल्प के अंकुर फूटते हैं।

कुछ लोग बाह्य क्रियाओं से अन्तर को जगाने का प्रयत्न करते हैं। वे लोग धोखे में रहते हैं। कुछ लोग तपस्या आदि क्रियाओं से अन्तर को जगाने में रत हैं। वे भी सफल नहीं हो पा रहे हैं, क्योंकि भीतर की भिन्न-भिन्न क्रियाएं भिन्न-भिन्न परिणामों को लाती हैं। सबकी अपनी भिन्न-भिन्न प्रक्रियाएं हैं। भिन्न-भिन्न परिणाम हैं। अध्यात्म को विकसित करने के लिए नाभि-जागरण की बात कही जाती है।

कुछ योगियों का अनुभव है नाभि केन्द्र को जाग्रत करने से आत्म-शक्तियों स्वयं जाग्रत हो जाती हैं। नाभि केन्द्र को जाग्रत करने के लिए गहरी नींद और दीर्घ श्वास परम आवश्यक है। गहरी नींद लेते समय हमारे सारे केन्द्र सो जाते हैं। एक नाभि-केन्द्र जाग्रत रहता है। जितनी गहरी नींद ली जाएगी, नाभि-केन्द्र को जागने का उतना ही अवसर मिलेगा।

जहां भयास्पद स्थितियां उत्पन्न होती हैं वहां अभय भावना का विकास होता है। अभय भावना से आत्म-जागरण होता है।

नीत्से ने व्यक्तित्व विकसित करने का सूत्र दिया है- 'खतरे में जीयो'। यह इसीलिए कि वहां अभय का विकास होता है। सुरक्षित स्थिति में अभय रहना कोई अभय नहीं है। खतरे की स्थिति में जो सहज रहता है। वह अभय होता है। अभय आत्म-केन्द्रित जीवन का साक्षी है।

हमें अपनी मूलभूत चेतना को जगाना है। उस जागरण के साधनों का चुनाव स्वयं करना है। अपने ही अनुभवों से करना है। तपस्या आदि शारीरिक क्लेशों से अगर वह होता है तो वह करना है। ध्यान आदि क्रियाओं से होता है तो वह करना है। अभय आदि भावना के विकास से होता है तो करना है। भगवान् महावीर की तरह प्रयोग करके देखना होगा। महात्मा बुद्ध की भांति प्रयोगशाला में उतरना है। एक का जागरण हो गया तो शेष का जागरण अपने आप हो जाएगा। 'जे एंग जाणई से सव्वं जाणई'। आत्म-जागरण के बाद मन-बुद्धि और इन्द्रियां सो ही नहीं सकतीं। अतः आत्म-जागरण के क्षेत्र में जागरूक होना

आवश्यक है। भगवान् महावीर ने कहा है- मनुष्य हरक्षण जागृत रहे वही अपनी बौद्धिक क्षमताओं का विकास और उपयोग कर सकता है। जाग्रत बुद्धि सुषुप्ति तो तोड़कर आत्म-जागरण की सम्भावनाओं को अनावृत कर देती है। भगवान् महावीर के भक्त हम सब आत्म-जागरण की दिशा में गति करने का संकल्प लें। ऐसा करके ही हम उनके अनुयायित्व को सार्थक कर सकेंगे।

## भजन

### -आचार्यश्री रूपचन्द्र

मेरी रसना के लिए तू है, तेरा ही नाम है  
और जग की वस्तुओं से कुछ न मेरा काम है।।

जिधर देखूं उधर तू ही, तू नजर आए मुझे  
तू ही मेरा तीर्थ पावन, तू ही मेरा धाम है। (1)

हो तुम्हारी वंदना के गीत, अधरों पर सदा,  
नयन की इन पुतलियों का, एक तू विश्राम है। (2)

जागते सोते कभी भूलूं, नहीं भगवन् तुझे,  
ज्ञान तेरा ध्यान तेरा, भान आठों याम है। (3)

प्राण जाएं या रहें, पर नाम होठों पर रहे  
तू ही है घनश्याम मेरा, “रूप” तू ही राम है। (4)

तर्ज-एक मैं हूं एक मेरी

## मनन-मंथन

### अहिंसा ही गाँधी जी के रामराज्य का आधार सूत्र

○ डॉ. रिखब चन्द जैन

गाँधी जयन्ती 2 अक्टूबर। पूरा विश्व संयुक्त राष्ट्र की घोषणा के अनुसार महात्मा गाँधी, अहिंसा नान वायलेन्स के मसीहा के जन्मदिन को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाता है। यह दिन एक शान्ति का शुभ सन्देश मानवता के लिए देता है। करुणा, प्रेम, सर्वधर्म समभाव, विश्व बन्धुत्व हथियार बन्दी, “बसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वेभन्तु सुखिनम्”, जीयो और जीने दो, लिब एन्ड लैट लिब, प्राणीयों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो आदि शुभ भावनाओं से प्रेरित यह शुभ दिन है। मानव ही नहीं प्राणी मात्र और वनस्पति जगत के लिए भी मंगलमय भावना लेकर यह अहिंसा दिवस मनाया जाता है। उपरोक्त सभी शुभ संकल्पों का सूत्रपात “अहिंसा” से ही होता है।

भारतीय धर्म और संस्कृति में अहिंसा ही ज्ञान सम्पदा का आधार है। वेद, पुराण, आदिनाथ रिषभ देव, राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, कबीर, थिखवल्लुवर, तुलसीदास, बाल्मिकी, नागार्जुन, त्यागराज, नरसी, मेहता, मीरा, नानक देव, महर्षि रमण सभी त्रिषि मुनियों ने अहिंसा का ही सन्देश दिया है। मान्यवर नरेन्द्र मोदी जी ने अपने जापान के दौरे में कहा “भारत के डी.एन.ए. में बस अहिंसा ही रची बसी है।”

भारतीय धर्म और दर्शन ही नहीं, दुनिया का कोई धर्म अहिंसा से असहमत नहीं हो सकता है। क्या कोई धर्म हिंसा करने, मारपीट झगड़ा करने, भेदभाव रखने के लिए कह सकता है? क्रिश्चियन, यहूदी, कन्फुसियस, इस्लाम, पारसी कोई भी धर्म हिंसा की इजाजत नहीं देता है।

महात्मा गाँधी ने अहिंसा का सन्देश ही नहीं दिया उसे रचनात्मक तरीके से जी कर दिखाया। रंग भेद, लिंग भेद, असमानता, दासता, पराधीनता सभी मसलों को गाँधी जी ने अहिंसा के माध्यम से हल करके मानवता को अंचम्भित कर दिया। दैनिक जीवन को शाकाहार, नशा मुक्ति, सुखी परिवार सम्बन्ध आदि व्यावहारिक तरीकों से अहिंसामय बनाने का रास्ता बताया। प्रेम, भाईचारा, सद्भावना का रास्ता दिखाया। गाँधी के वृत्तान्तों से प्रभावित, विश्व युद्ध से प्रताड़ित विश्व के प्रमुख राष्ट्रों ने राष्ट्र संघ (जो बाद में विस्तारित होकर संयुक्त राष्ट्र बना) की स्थापना अहिंसा, प्रेम, नि-शस्त्रीकरण के आधार पर की। ब्रिटेन से भारत को आजादी बिना खूनी क्रान्ति के मिली - अहिंसा के प्रयोग से। भारतीय

लोकतन्त्र का संविधान भी अहिंसा के आधार पर बना। बीसवीं सदी में पराधीनता से मुक्त अनेकानेक राष्ट्रों ने अहिंसा को अपनाया।

इन सब तथ्यों से स्पष्ट है कि गाँधी जयन्ती “अहिंसा दिवस” के रूप में आज नहीं तो कुछ एक वर्षों के बाद “क्रिसमस डे” से भी अधिक जोर शोर और उल्लास के साथ मनाई जायेगी। दिवाली से भी अधिक जोर से। ईद से भी अधिक खुशी से। अणु, परमाणु बमों से त्रस्त भयभीत मानव को अहिंसा के अलावा शान्ति एवं समृद्धि का कोई और मार्ग है ही नहीं।

भारत में भी इस दिन को और विस्तार से स्कूल कॉलेजों में, जन-जन, घर-घर में सभी के साथ मनाना चाहिये ताकि युवकों और आने वाली पीढ़ियों को अहिंसा का महत्व विश्व शान्ति और व्यक्ति परिवार में मधुरता के लिए दिल और दिमाग में स्थापित रहे। भविष्य निर्माण में यह एक बड़ा योगदान रहेगा।

गाँधी जी, महावीर की अहिंसा की सूक्ष्मतम विश्लेषण से सर्वाधिक प्रभावित थे। महावीर की अहिंसा का विवेचन ही गाँधी जी अपने मित्र श्रीमद् राजचन्द्र से मिला था। महावीर ने मन-वचन-कर्म तीनों माध्यम से होने वाली हिंसा न करने को कहा। “भाव हिंसा भी नहीं।” श्री राम और गीता में गाँधी जी की अटूट आस्था थी। अहिंसा का विवेचन श्री राम का कोई भिन्न नहीं था। रामराज्य और स्वराज का गाँधी जी उद्घोष ही नहीं, कामना करते रहे। जन-जन में इसकी चाह जगाई। गाँधी जी ने “हे राम” के पवित्र स्मरण के साथ ही प्राण त्यागे। अभी कुछ महीने पूर्व रामनवमी पर चुनाव संहिता के लागू रहते हुये श्री नरेन्द्र भाई मोदी ने अपने चुनावी भाषण में रामराज्य का आवाहन किया। चुनाव आयोग ने इसे मर्यादा का उल्लंघन बताया। पर कोर्ट और सन्तों ने इसे धार्मिक सन्देश नहीं, अहिंसा आधारित जनभावना, जन-जन की कामना करार दी। सन्तों ने कहा रामराज्य का अर्थ है “बाघ, हिरण और गाय” एक साथ पानी पी सके। जैन धर्म में भी अहिंसा का विवेचन बाघ और गाय के एक साथ पानी पीने के दृश्य से चित्रित करते रहे हैं। इसका तात्पर्य यह है कि मत मतान्तर विचारों में विविधता, स्वभाव में टकराव होने पर भी प्रेम और सहअस्तित्व को स्वीकारते हुये जीना। आपस में बैर, विरोध, लड़ाई, हिंसा भाव नहीं रखना। नारद, पुराण, शान्ति पर्व, रामचरित मानस, महाभारत, गौस्वामी जी के आदि सभी ने “अहिंसा परमोधर्म” का उद्घोष किया। अतः रामराज्य का तात्पर्य अहिंसा आधारित समानता मूलकः सर्वधर्म समभाव, धर्म सापेक्ष, पंथ निरपेक्ष राज्य व्यवस्था से है। ऐसी रामराज्य स्वराज की व्यवस्था लोकतान्त्रिक तरीके से जनकल्याणकारी ध्येय से होनी चाहिये। “राम राज्य” शब्द गाँधी जी

को सर्वश्रेष्ठ राज्य व्यवस्था की व्याख्या करने के लिए अति अनुकूल लगता था। श्रद्धा से इस शब्द (राम राज्य शब्द) को अनपढ़ और अधपढ़ भी श्रद्धा, निष्ठा, सत्यता, सरलता से स्वीकारते, सही व्यवस्था मानते। रामराज्य के सिद्धान्त की खिलाफत कोई धर्म, कोई नीति शास्त्र नहीं कर सकता है क्योंकि उसमें किसी एक धर्मावलम्बी के कल्याण की भावना नहीं है। सर्वहित सर्वजन कल्याण की सर्व सुखिनभवन्तु की भावना है। ऐसा कल्याणकारी राज्य व्यवस्था मानव ही नहीं प्राणी मात्र और पर्यावरण की भी सुरक्षा सुनिश्चित करता है। सत्य ही धर्म है। सत्यमेव जयते। विवेक से ही सत्यग्राही बन सकते हैं। रामराज्य शब्द सदियों क्या हजारों वर्ष पुराना है, लेकिन सही अर्थ समझने पर आज भी प्रासंगिक एवं विषिष्टतम चाहनीय है।

राम राज्य ही अहिंसामय होता है। यही गाँधी जी के स्वराज और रामराज्य का सपना था। विश्व को अशान्ति का खतरा कुछ एक राजनेता, गणनायक, सेनानायक, प्रशासन वर्ग के माइन्ड सेट में अहम, क्रूरता, बदले एवं हिंसक भावना से होता है। ऐसे वर्ग का दिमाग टंडा, अहम रहित रखना आवश्यक है। ऐसे लोगों के फितुर से लाखों सैनिक ही नहीं निस्पक्ष निर्दोष नागरिक भी मारे जा सकते हैं। राजा-नेता-सेनापति नहीं हिंसात्मक युद्ध का भार सैनिक एवं जनता को उठाना पड़ता है। ऐसे निर्णायक लोगों के दिल-दिमाग में सदा अहिंसा और क्षमा भाव अवश्य रहना ही परमाणु युग में शान्ति की गारन्टी हो सकती है। आतंकवादी और अतिवादी दोनों ही से मानव को खतरा है। ऐसा खतरा भी प्रेम, करुणा और अहिंसा के संस्कारों से ही दूर हो सकता है। हिंसा से हिंसा कभी भी खत्म नहीं हो सकती है। अहिंसा ही हिंसा को समाप्त करती है।

आइये गाँधी जयन्ती पर बापू के बताये अहिंसा के रास्ते पर चले। राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, नानकदेव का रास्ता ही गाँधी का रास्ता है। सभी धर्म यहीं शिक्षा देते हैं। हम सबका अहिंसा और सत्य से ही जीवन मंगलमय हो सकता है। गाँधी जी जिधर चले, हम सब उधर बढ़े।

### डॉ. विनीता गुप्ता को ‘साहित्यश्री’ का सम्मान

ओजस्विनी (साध्वीश्री मंजुलाश्री जी की जीवन-गाथा) हंस अकेला (पूज्य गुरुदेव के जीवन पर उपन्यास) की लेखिका डॉ. विनीता गुप्ता को दिल्ली विश्व विद्यालय ने ‘साहित्यश्री’ सम्मान प्रदान किया है। बहुत-बहुत बधाई।



## खुदाराम

हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य का बाजार गरम होने के एक महिने पूर्व एक विचित्र पुरुष हमारे गांव में पधारे उनकी अवस्था पचास वर्ष से अधिक जान पड़ती थी। वह वस्त्र के नाम पर केवल लंगोट धारण किया करते थे। वही उनकी सारी गृहस्थी और सम्पत्ति थी। उनका मुख तो रोबीला नहीं था, पर उन पर विचित्र आकर्षण दिखाई देता था।

दाढ़ी एक फुट लंबी थी, सिर के बाल भी बड़े-बड़े थे उनमें एक ऐसा आकर्षण था, जिससे कस्बे के छोटे-छोटे बच्चे उन पर जान दिया करते थे। उनका नाम था खुदाराम। जब खुदाराम उनके गांव की गलियों में आते तो गांव के सारे छोटे-छोटे बच्चों की मंडली सब काम छोड़कर उनकी ओर दौड़ पड़ती थी। और बोलती खुदाराम जैसे दो खुदाराम जैसे दो। बच्चों की आवाज से गली गूंज उठती थी। पहले तो खुदाराम दो-चार बार बच्चों को मुंह बिगाड़-कर डराने की कोशिश करते फिर दो-तीन बच्चों को पीठ पर चढाकर बगल में दबाकर या कंधों पर उठाकर भाग खड़े होते, अरे भागा-भागा, हो-हो-हो पकड़ना जी आदि कहते हुए अन्य बच्चे खुदाराम को कस कर पकड़ लेते। और अंत में लाचार होकर वह खड़े हो जाते बच्चों को अपनी पीठ के ऊपर से नीचे उतार देते और वह पूछने लगते बच्चों तुम्हें क्या चाहिए? बच्चे जोर से चिल्लाते जैसे खुदाराम जैसे। खुदाराम बड़े जोर से हंसते और हंसते ही हंसते खाली मुट्ठी को बंद कर हवा में अपने हाथ को इधर-उधर घुमाने लगते। देखते ही देखते चारों ओर झन्न-झन्न की आवाज गूंज उठती बच्चे प्रसन्न होकर जैसे लूटने लगते थे और खुदाराम वहां से नौ-दो-ग्यारह हो जाते थे।

खुदाराम को सबसे अधिक इन बच्चों ने मशहूर किया हुआ था। फिर तो हिन्दू-मुसलमान दोनों जाति के लोगों ने विशेष कर औरतों ने खुदाराम को न जाने क्या-क्या बना डाला, कितनों के बच्चे उनकी उट-पटांग औषधियों से अच्छे हो गये। कितनों को खुदाराम की कृपा से नौकरी मिल गई। कितने मुकदमे जीते गए। पूरा गांव का गांव उन्हें पूजने लगा। मगर खुदाराम अपनी ही मस्ती में ज्यों के त्यों बने रहे उनका दिन रात चारों ओर बच्चों की मंडली के साथ घूमना न रुका। और न ही खुदाराम की कंठ की ध्वनि रुकी।

**तू है मेरा खुदा मैं हूँ तेरा खुदा,  
तू खुदा मैं खुदा, फिर जुदाई कहां।**

धूनी रमाए खुदाराम अपनी ही मस्ती में गा रहा था। तभी किसी ने पुकारा- ओ खुदाराम, चुप रहो! खुदाराम ने कहा- मैं कोई युक्ति सोच रहा हूँ। कैसी युक्ति सोच रहे

हो खुदाराम? हमें भी तो बताओ? सोच रहा हूँ कि क्या उपाय करूँ कि आदमी-आदमी में लड़ाई न हो। तुम लोग लडोगे नहीं। लड़ने का विचार नहीं है, पर भगवान की सवारी जरूर निकलेगी? खाना नहीं खाउंगा, पर मुंह में कौर जरूर डालूंगा, हा-हा-हा यही मतलब है न? लाचारी है खुदाराम! फिर तो धर्म के नाम पर खून की नदी बहेगी? तुम लोग इन्सान क्यों हुए? तुम्हें तो शेर, चीता, भालू, भेड़िया होना चाहिए था। वैसी अवस्था में तुम्हारे रक्त-पिपासा मजे में शांत होती। धर्म के नाम पर लड़ने वाले इन्सान क्यों होते हैं? अपरिचित आगंतुक आर्यों ने शर्मा जी से पूछा क्या यह पागल है? हां-हां खुदाराम ने कहा वैद और कुरान नहीं पढ़ा है इसलिए पागल है, सत्यार्थ प्रकाश नहीं देखा है इसलिए पागल है, धर्म के नाम पर खूरंजी पसंद नहीं करता है इसलिए पागल है, खदर का कुरता नहीं पहनता, लेक्चर नहीं दे सकता है इसलिए खुदाराम पागल है। मुसलमान कहते हैं तू पागल है इस बीच मैं न पड़। हिन्दू भी यही कहते हैं। अच्छी बात है लडो यदि होशियारी इसी में ही है तो लडो! और खुदाराम बडबडाता और गुनगुनाता यह बोलता हुआ-

**तू भी इन्सान है, मैं भी इन्सान हूँ  
गर सलामत हैं हम तो डर कहां  
तू है मेरा खुदा, मैं हूँ तेरा खुदा  
तू खुदा, मैं खुदा फिर जुदाई कहां।**

खुदाराम नाचता-कूदता जोर से हंसता हुआ अपने रास्ते चला गया। गांव के हजारों हिन्दू पुरुष आर्य समाज-मन्दिर की ओर वेद भगवान के जुलूस में शामिल होने के लिए चले गए। उधर मुसलमान पुरुष भी पुराने पीर की मस्जिद में इकट्ठा हो गये। जुलूस में बाधा डालने के लिये सशस्त्र एकत्र हो गए। हिन्दू और मुसलमानों के दोनों घरों में या तो बूढे थे या स्त्रियां और बच्चे। सब के घर के दरवाजे अन्दर से बन्द थे। तभी एक मुसलमान के घर के दरवाजे पर दस्तक दी- खुदाराम की मां कौन है? मैं हूँ- अन्दर से आवाज आई? जरा बाहर तो आओ मां मैं हूँ खुदाराम। दरवाजे खोलने पर एक बुढिया बाहर निकली ओर बोली क्या है खुदाराम? तुम्हें खाना चाहिए? नहीं मां, आज एक भीख मांगने आया हूँ- क्या दोगी ना? बुढिया ने बोला तुम्हें क्या चाहिए फकीर? तुम्हें क्या कमी है? ये बुढिया पूरा करेगी मांगो तुमने मेरी बेटी की जान बचाई थी। हम हमेशा तुम्हारे गुलाम रहेंगे। मांगो क्या लोगे? पहले कसम खा मां दोगी न? कसम पाक परवरदिगार की खुदाराम, तुम्हारे लायक कोई चीज अगर मेरे वश में होगी तो जरूर दूंगी। तो फिर चलो मेरे साथ! हम लोग हिन्दू मुसलमानों का आपस का झगड़ा रोकें। बच्चों को भी साथ लेलो। मैं मुहल्ले भर की कस्बे

भर हिन्दूओं की औरतों व बच्चों की पलटन लेकर दोनों जातियों के पुरुषों पर आक्रमण करूंगा उन्हें भगवान या खुदा या धर्म के नाम पर लडने से रोकूंगा। मुस्लिम औरत आश्चर्य चकित सी खड़ी सोच में पड गई। ये खुदाराम क्या मांग रहा है।

चुप क्यों हो गई मां? तूने मुझे भीख देने की कसम खाई थी। मैं तो तेरे हित की ही बात करता हूँ? इस रक्तपात में पुरुषों के नहीं स्त्रियों के कलेजे का खून बहाया जाता है। स्त्रियां विधवा हो जाती हैं। माताएं अपने बच्चे को खो देती हैं। बहने अपमानित होती हैं। बच्चे अनाथ हो जाते हैं। पुरुषों की यह ज्यादती तुम्हारे ही रोकने से रुकेगी? चलो उन पत्थरों को समझाओ और उन्हें लडने से रोको। उन्हें बताओ कि तुम्हारा ये शरीर तुम्हारी माताओं की धरोहर है। उनकी इच्छा के विरुद्ध उनका नाश करने वाले तुम कौन हो? मां, देर न करो नहीं तो सब चौपट हो जाएगा। जहां एक ओर उत्तेजित मुसलमान खुदा के नाम पर ईंट, पत्थर और डंडे चलाने पर उतारू थे, वहीं दूसरी ओर हिन्दू वेद भगवान का जुलूस निकालने के लिए रघुनन्दन प्रसाद के परिवार के साथ हजारों हिन्दू पुरुषों के साथ मंदिर में डटा हुआ था क्योंकि सवारी मस्जिद के आगे से गुजरनी थी। युद्ध छिडने ही वाला था कि गंगा की कल-कल करती धारों की तरह हजारों स्त्रियों की कंट की ध्वनि मुसलमान, भाईयों के दल के पीछे सुनाई दे रही थी। पहले खुदाराम गाते और फिर उनके बाहर स्त्रियां और बच्चे उसी पद को दुहराती थी।

तू है मेरा खुदा मैं हूँ तेरा खुदा- तू खुदा मैं खुदा फिर जुदाई कहां, छोटे-छोटे बच्चों के कंट की कोमल ध्वनि के आगे माताओं के कंट की मधुर स्वर के आगे उत्तेजित युवकों के हृदय की राक्षसता शांत ओर पुलकित होकर ओर अपना मस्तक झुकाकर खड़े होगए मुसलमानों के दल ने चुपचाप स्त्रियों के लिए इस जुलूस के लिए रास्ता दे दिया। हिन्दू दल वाले आंखें फाडकर खुदाराम और उनकी स्ववर्णीय सेना की ओर देखने लगे। उस सेना में हरेक हिन्दू और मुसलमान दल के मुखिया ने पूछा तुम लोग यहां क्यों आई हो? इसी प्रश्न को हिन्दुओं ने भी दुहराया? एक मुस्लिम बूढ़िया आगे आई और बोली हम आई हैं तुम्हें मरने से बचाने आई हैं। तुम हमारे बेटा जिन्हें हमने नौ महिने पेट में रखा और रात-रात भर जागकर, भूखे रह कर अल्हा से दुआएं मांगकर अपनी आंखों को खुश रखने के लिए दिन शांत रखने के लिए इतना बड़ा त्याग किया है।

तुम्हारे लिए हम खुदा से इबादत करती हैं- तुम्हीं हमारे खुदा हो। यह तुम क्या कर रहे हो? धर्म के नाम पर खून बहाने की क्या जरूरत है? तुम्हें यह शरारत किस शैतान ने सिखाई है? बच्चे तुम्हारी मांताएं तुम्हें खोकर दुःखी हो जाएंगी उनकी जिन्दगी बरबाद

हो जाएगी। बहिश्त पाने पर भी तुम्हें चैन न मिलेगा तू लडमत। खून से दुष्ट शैतान भले ही खुश हो जाए पर खुदा कभी खुश नहीं हो सकता है। खुदा अगर खून पसंद करता तो वह हमारे लिए पानी न बनाकर खून ही बनाता। अगर गंगा खूनी होती समंदर भी खून का समंदर होता। तू खून के फेर में न पड़ो मेरे कलेजे के टुकड़ो, परवरदिगार खून नहीं पसंद करता है।

फिर खुदाराम ने हिन्दूओं को ललकारा- अरे वेद के पागलो चलो ले जाओ अपना जलूस वेद भगवान की सवारी माताएं तुम्हें रास्ता देती हैं। मुसलमानों के हाथों के शस्त्र नीचे झुक गए बाजा बजाने वाले बाजा बजाने लग गए। माताओं ने रास्ता बनाया और वेद भगवान की सवारी निकाली। हजारों मंत्र-मुग्ध हिन्दू-मुसलमानों के साथ निकाली गई सावन भादो के बादलों की तरह मधुर ध्वनि से पुनः खुदाराम गरजे माता वसुंधरा की सभी संतान हैं उन माताओं के हृदय से पुनः प्रतिध्वनि हुई- तूने मंदिर बनाया तू भगवान। मैंने मस्जिद उठाई, मैं रहमान हूँ तू भी भगवान है मैं भी भगवान हूँ। तू खुदा मैं भी खुदा फिर जुदाई कहां।

इस पवित्र जुलूस के नेता थे खुदाराम, और उनके पीछे थे हिन्दू मुसलमान के बच्चे, बच्चों के पीछे दोनों जाति की माताएं और उन सबके पीछे मुसलमान पुरुष सशस्त्र संरक्षकों की तरह जुलूस के साथ चल रहे थे। मानो आज प्रकृति बहुत पुलकित थी आसमान में तारे चंद्रमा भी मुस्करा रहे थे। वह दृश्य पृथ्वी का स्वर्ग था।

**-प्रस्तुति : साध्वी वसुमती**

## विश्व में सबसे बड़ा क्या है

- विश्व की सबसे बड़ी खारे जल की झील रूस में स्थित 'कैस्पियन सागर' है।
- विश्व की सबसे बड़ी नहर रूस में स्थित 'वाल्तिक व्हाई सागर' है।
- विश्व की सबसे बड़ी दीवार 'चीन की दीवार' है।
- विश्व का सबसे बड़ा चिड़ियाघर दक्षिण अफ्रिका में स्थित 'कूजर नैशनल पार्क' है।
- विश्व का सबसे बड़ा स्टेडियम प्राग में स्थित 'स्टोर होम स्टेडियम' है।
- विश्व का सबसे बड़ी सड़क सुरंग स्विट्जरलैंड के 'गोथार्ड पर्वत' की है।
- विश्व का सबसे बड़ा टैलीस्कोप रूस की 'काकेशश पर्वत चोटी' पर स्थित है।
- विश्व का सबसे बड़ा यात्री जलयान ब्रिटेन 'कीन एलिजाबेथ' यात्री जलयान है।
- विश्व का सबसे बड़ी घंटी मास्को में स्थित 'दी ग्रेट बैल ऑफ मास्को' है।

**-प्रस्तुति : विनय**

## अथ झाड़ू-कथा

एक बार फिर मौसम झाड़ुओं का आ गया है। टमाटर की तरह इसके भी रेट आसमान का छूने लगे हैं। जो झाड़ू हमारे बचपन में कोई 25 पैसे को नहीं पूछता था आज वह 125 का मिल रहा है। जिनका चुनाव चिन्ह था उनकी हसरतों पर यही 49 दिनों के बाद फिर गया। 'आ झाड़ू मुझ पर' फिर वाली हालत जनाबे आला ने खुद कर ली।

गांधी जयंती के बाद यह राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक बन गया। कई महानुभावों ने इसे अपनी कार के आगे पार्टी के झंडे की तरह लहरा डाला और गाने लगे झीगा लाला। जिसकी लाठी उसी की भैंस वाला मुहावरा ही बदल डाला। जिसकी झाड़ू उसकी सत्ता। सत्ता का प्रतीक बन गया यह नाचीज जो घर के एक कोने में पड़ा रहता था। उसे खड़ा रहने की भी इजाजत नहीं थी। जितना बड़ा झाड़ू उतनी बड़ी राजनीति में कद हो गया। जैसे एक मच्छर पहलवान को हिजड़ा बना सकता है, एक झाड़ू किसी को सी.एम. बना सकता है और उस पर फिर भी सकता है। द्वेष की तकदीर और तदबीर दोनों ही बदल सकता है। इसकी शक्ति को अमेरिका से लौटने के बाद, केवल मोदी जी ने ही पहचाना।

यह पत्नियों का अस्त्र-शस्त्र दोनों ही हैं। यानी टू इन वन। एक मियां रात के दो बजे झूमते-लहराते घर में बोटल लेकर जा रहे थे। उसके दूसरे साथी ने दूर से देख कर उसे चेताया कि यार लगता है भाभी आज स्वागत के लिए हाथ में झाड़ू लिए ताडका वाली मुद्रा में खड़ी है। नशा काफिर हो गया। पहुंचते ही बटन लगाया। 'अरे...रे...रे... इतनी देर तक सफाई... थक जाओगी... चलो सो जाओ... कल करवा चौथ का व्रत भी रखना है।

ऐसे ही एक सास को कड़क बहू टकरा गई। सारा दिन टी.वी. या मोबाइल। स्वच्छता अभियान के दौरान सास जी ने ड्रामा करते हुए अपने पुत्र को रोल समझाया कि मैं जब झाड़ू लगाने लंगू तो तू कह देना, 'अरे मां आप छोड़ो... मैं लगा देता हूं। मुई को शर्म आ जावेगी। अगले दिन माता जी ने झाड़ू उठाया और जैसे ही लाइट, साउंड एक्शन हुआ तो बहू जी बोली, 'अरे क्यों लड़ते हो आपस में? एक दिन आप लगा दिया करो। एक दिन माता जी लगा लिया करेंगी।' और सास जी का सीरियल प्लॉप।

यह एक बहुत ही कारगर हथियार भी है। ऑल इन वन। सफाई कर्मी अक्सर इसका प्रयोग करते रहते हैं। जैसे बाबू लोग कलम छोड़ हड़ताल करते हैं, वैसे ही ये लोग झाड़ू छोड़ हड़ताल कर देते हैं। सरकार न माने तो अस्त्र शस्त्र के रूप में यह एक आंदोलन बन जाता है और कभी-कभी अफसर लोगों पर फिर जाता है।

हमारे एक दिलफेंक शायर मित्र जो हर मौके पर शेर छोड़ने में माहिर थे, एक महिला

सफाई कर्मी को देख कर बोले, सर पर फलक- हाथ में दुमदार सितारा, चला आ रहा है दिलवर हमारा। वह बोली- 'ऐसा दुमदार सितारा फसाउंगी कि मोर बन के नावेगा, उतर जाएगा बुखारे इश्क तुम्हारा।'

एक महिला जिसे मांगने की आदत थी, एक दिन पड़ोस में गई और बोली- 'बहन यह कुकरी की बुक बहुत अच्छी है, ले जा रही हूं।' पड़ोसन बोली कि मैं किताब दिया नहीं करती, यही जितना पढ़ना है पढ लो। कुछ दिन बाद यह महिला उसके घर गई और थोड़ी देर के लिए झाड़ू मांगा। उसने भी नहले पर दहला मारा, 'बहना! मैं किसी को झाड़ू देती नहीं। यहां जितना लगाना चाहो लगा लो।'

2 अक्टूबर को मोदी जो ने स्वच्छता अभियान का शगूफा क्या छोड़ा कि घर-घर पति परेशान हो गए। जबकि 1948 से गांधी जयंती पर पब्लिक हॉली डे पर बाल बच्चों को लेकर पिकनिक मनाते थे। इस बार छुट्टी तो मरवाई ही मरवाई साथ में दफ्तर में सदियों से जमी धूल तक चटवा दी। घर लौटे तो पत्नियां पिल पड़ी, 'आं हों! दफ्तर में सफाई कर सकते हो? घर में क्यों नहीं? दफ्तर से क्या मेंहदी लगवा के आए हो? कान खोल के सुन लो... काम वाली बाई की मैंने छुट्टी कर दी है। भारत सरकार भले ही मोदी की हो पर घर में सरकार मोतिया की ही रहेगी।' उधर काम वालियां दीवाली के अवसर पर पैसे बढ़ाने का अभियान शुरू करने वाली थी परंतु मोदी जी के सफाई अभियान के कारण बेचारी एक दूसरे के गले लग कर कह रही हैं, 'बहना! मेरे तो इस चक्कर में चार घर छूट गए हैं। दीवाली से पहले दीवाला निकल जाएगा।'

स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करने के लिए हमारे नेता जी भी नगर के सबसे नीट एंड क्लीन कालोनी में पहुंच गए नहा धो कर। सिर्फ एक्सल में धुला खादी का कुर्ता पयजामा। मोदी कट सुर्ख लाल बास्केट, ताजा तरीन तराशी हुई धवल दाढ़ी, गोल्डन फ्रेम का चश्मा, आस पास अर्धचंद्राकार में लगभग उसी ड्रेस में चमचे। काफी देर तक मोबाइल पटपटाते रहे। तभी एक चमचा दौड़ा-दौड़ा पास आया और बोला, 'सर! कचरा भी आ गया है और मीडिया भी।' वे बड़ी शान से हाथ में लंबा सा बिल्कुल नया झाड़ू लेकर धीरे-धीरे आगे बढ़े और कैमरा मैन उसी स्पीड से पीछे हटते गए मानो भारतीय सेना सीमा पर आगे बढ़ रही हो और पाकिस्तानी पीछे हट रहे हों। फोटोग्राफर उन्हें पोज बता रहे थे, सर, झाड़ू ऐसे पकड़िये जैसे धोनी बैट पकड़ते हैं। आंखें कैमरे की तरफ, थोड़ा सा झुकिए... यस परफेक्ट... अब कचरे के पास रुक कर इसे उस पर जरा सा चलाइये ताकि आरिजनल और रियलिस्टिक शॉट आ सके। बस सर! ऐसी पिक्चर बनेगी कि बताने के लिए, हजार शब्दों की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

हिन्दी कथा-साहित्य में बेताल पच्चीसी की अपनी अलग पहचान है। इन कथाओं में नीति, संस्कृति और जीवनोपयोगी शिक्षाएं हैं। उसी की एक-एक कथा पढ़िये हर अंक में।  
-गतांक से आगे

अयोध्या नगरी में वीरकेतु नाम का राजा राज करता था। उसके राज्य में रत्नदत्त नाम का एक साहूकार था, जिसके रत्नवती नाम की एक लड़की थी। वह सुन्दर थी। वह पुरुष के भेष में रहा करती थी और किसी से भी ब्याह नहीं करना चाहती थी। उसका पिता बड़ा दुःखी था।

इसी बीच नगर में खूब चोरियां होने लगी। प्रजा दुःखी हो गयी। कोशिश करने पर भी जब चोर पकड़ में न आया तो राजा स्वयं उसे पकड़ने के लिए निकला। एक दिन रात को जब राजा भेष बदलकर घूम रहा था तो उसे परकोटे के पास एक आदमी दिखाई दिया। राजा चुपचाप उसके पीछे चल दिया।

चोर ने कहा- तब तो तुम मेरे साथी हो। आओ, मेरे घर चलो। दोनों घर पहुंचे। उसे बिटलाकर चोर किसी काम के लिए चला गया। इसी बीच उसकी दासी आयी और बोली- 'तुम यहां क्यों आये हो? चोर तुम्हें मार डालेगा। भाग जाओ।'

राजा ने ऐसा ही किया। फिर उसने फौज लेकर चोर का घर घेर लिया। जब चोर ने ये देखा तो वह लड़ने के लिए तैयार हो गया। दोनों में खूब लड़ाई हुई। अन्त में चोर हार गया। राजा उसे पकड़कर राजधानी में लाया और उसे सूली पर लटकाने का हुक्म दे दिया।

संयोग से रत्नवती ने उसे देखा तो वह उस पर मोहित हो गयी।

पिता से बोली- मैं इसके साथ ब्याह करूंगी, नहीं तो मर जाऊंगी।

पर राजा ने उसकी बात न मानी और चोर सूली पर लटका दिया। सूली पर लटकने से पहले चोर पहले तो बहुत रोया, फिर खूब हंसा। रत्नावती वहां पहुंच गयी और चोर के सिर को लेकर सती होने को चिता में बैठ गयी।

उसी समय देवी ने आकाशवाणी की- मैं तेरी पतिभक्ति से प्रसन्न हूं। जो चाहे सो मांग।

रत्नवती ने कहा- मेरे पिता के कोई पुत्र नहीं है। सो वर दीजिए, कि उनसे सौ पुत्र हों।

जिन अफसरों ने सारी उम्र डक्के के दो नहीं किए थे, उन्हें डंडे के आगे झुकना पड़ गया। स्वच्छता अभियान के चक्कर में कभी फीजियो थेरेपिस्ट से कमर की चूक निकलवा रहे हैं तो कभी झाड़ू के बाद हाथ में झंडू बाम थामे हुए हैं। कैमिस्टों ने अपनी दुकानों में गांधी जी की डंडे वाली फोटो टांग ली है और धूप बत्ती कर रहे हैं। 2 अक्टूबर के बाद उनकी तो निकल पड़ी है।  
-मदन गुप्ता 'सपाटू'

### चुटकुले



1. बस के गेट पर लटके हुए मुसाफिरों से कंडक्टर ने कहा- भाइयो, अंदर हो जाओ। इस तरह गेट पर लटकना आपकी जान के लिए खतरनाक है। लेकिन जब कोई भी अंदर न हुआ तो कंडक्टर गुस्से में बोला- तुम्हें तुम्हारी पत्नी की कसम, अंदर हो जाओ। इतना सुनना था कि जो मुसाफिर सीटों पर बैठे थे वे भी गेट पर आकर लटक गए।

2. संता- जो इंसान हमेशा फ्री में हंसता रहता है उसे क्या कहते हैं? बंता - हंसमुख।

संता - जिस इंसान का हंसना बिल्कुल बंद हो गया हो उसे क्या कहते हैं?

बंता - हसबैंड।

3. कस्टमर - मुझे आपके होटल में एक हफ्ता पहले ही आ जाना चाहिए था। होटल मालिक - ये तो आपकी मेहरबानी है साहब। क्या आपको सचमुच हमारा होटल इतना अच्छा लगा?

कस्टमर - नहीं, बात ये है कि जो खाना अभी-अभी मैंने खाया है, वो उस वक्त ताजा तो रहा होगा।

4. टीचर ने वरुण से कहा- तुम जो भी काम करते हो, गलत करते हो। ऐसे में कॉलेज पास करने के बाद तुम्हें नौकरी कौन देगा।

वरुण - मैडम, मैं मौसम विभाग में नौकरी करूंगा।

5. टीचर- ऐसे तीन शब्द बताओ जो सबसे ज्यादा बोले जाते हैं।

स्टूडेंट- मुझे नहीं पता।

टीचर- शाबास बैठ जाओ।

-प्रस्तुति : सुपारस

## आहार का रसास्वादन

मीठे भोज्य पदार्थ पुष्टिदायक, शुक्र तथा ओजवर्द्धक, बलकारक, त्वचा के लिए उपयोगी तथा शरीर का भार बढ़ाने वाले होते हैं। अधिक मीठी चीजों को खाने से मोटापा, आलस्य, नींद का अधिक आना, भूख न लगना, भोजन ठीक से न पचना, शरीर में भारीपन महसूस होना आदि रोग हो जाते हैं...

आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य शरीर के अपस्तम्भ (आधार) माने गए हैं। इनके उचित व्यवहार के द्वारा ही शरीर स्वस्थ रहता है। बहुत कम लोग ऐसे हैं जो आहार की सही व्यवस्था जानते हैं। ऐसे में आवश्यकता है तो सिर्फ ऐसी भोजन व्यवस्था की जो स्वास्थ्य के लिए फायदा करने वाली हो और जिसका सेवन सुगमता से किया जा सके।

### मीठा भोजन कितना लाभकारी

मीठे खाद्य पदार्थों में चीनी, गुड़, दूध, घी, अंगूर, नारियल आदि आते हैं। मीठे भोज्य पदार्थ पुष्टिदायक, शुक्र तथा ओजवर्द्धक, बलकारक, त्वचा के लिए उपयोगी तथा शरीर का भार बढ़ाने वाले होते हैं। अधिक मीठी चीजों को खाने से मोटापा, आलस्य, नींद का अधिक आना, भूख न लगना, भोजन ठीक से न पचना श्वासकुच्छता, शरीर में भारीपन महसूस होना आदि रोग हो जाते हैं जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति मधुमेह, उच्च रक्तचाप और हृदय रोग जैसी व्याधियों से पीड़ित हो सकता है।

### नमकीन भोजन कितना गुणकारी

नमक भोजन का पाचन करता है, भूख को बढ़ाता है, भोजन में रुचि उत्पन्न कराता है, मुख में झाव बढ़ाने वाला और कफ को द्रवीभूत करने वाला होता है। नमक के अधिक सेवन से मूर्च्छा, पुरुषत्वनाशक, बाल झड़ना, असमय बालों का सफेद होना, रक्तगत रोग और खट्टे डकार अधिक आना आदि रोग हो सकते हैं लेकिन अपवाद स्वरूप सेंधा नमक का प्रयोग निरापद है।

चटपटा खाना भोजन की पाचन क्षमता बढ़ाता है, क्षुधावर्द्धक है, मुखशोधक करता है, कृमि नाशक है, वसा को कम करता है और विषहर के रूप में प्रयोग किया जाता है। त्वचा के रोगों में होने वाली खुजली को दूर करता है। अधिक मिर्च वाला भोजन करने से हड्डियों की कमजोरी, कमर गला आदि में दर्द, कब्ज, मूत्र में जलन, मुंह में छाले पड़ना आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

देवी प्रकट होकर बोलीं- यही होगा। और कुछ मांगो।

वह बोली- मेरे पति जीवित हो जायें।

देवी ने उसे जीवित कर दिया। दोनों का विवाह हो गया। राजा को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने चोर को अपना सेनापति बना लिया।

इतनी कहानी सुनाकर वेताल ने पूछा- हे राजन्, यह बताओ कि सूली पर लटकने से पहले चोर क्यों तो जोर-जोर से रोया और फिर क्यों हंसते-हंसते मर गया?

राजा ने कहा- रोया तो इसलिए कि वह राजा रत्नदत्त का कुछ भी भला न कर सकेगा। हंसा इसलिए कि रत्नवती बड़े-बड़े राजाओं ओर धनियों को छोड़कर उस पर मुग्ध होकर मरने को तैयार हो गयी। स्त्री के मन की गति को कोई नहीं समझ सकता।

इतना सुनकर वेताल गायब हो गया और पेड़ पर जा लटका। राजा फिर वहां गया और उसे लेकर चला तो रास्ते में उसने यह कथा कही।

## गीतिका

### -साध्वी मंजूश्री

**प्रभो! मुझको शरण में लो, एक तेरा सहारा है,  
पड़ी मझधार में नैय्या, ढूँढती वह किनारा है।**

लिया पथ साधना का पर, उत्तर पाई नहीं अन्दर,  
करूँ कैसे प्रभु दर्शन, जरा कर दो इशारा है।

मिटी मन की नहीं ममता, पनप पाई नहीं समता,  
दुःख अपमान में हरदम भटकता मन बेचारा है,

धिर-2 आते दुख बादल, रहे मन मेरू सम अविचल,  
बने अन्तर मुखी चेतन, कर दो ज्ञान उजेरा है।

न चिन्ता हो, न चिन्तन हो, लगे प्रभु ध्यान में मन हो,  
दुखों से मुक्त हो मंजू, सहजानद सुप्यारा है।

**तर्ज- मेरा दिल तोड़ने वाले**

## कसैला भोजन कितना उपयोगी

कसैले खाद्य पदार्थों के अंतर्गत शहद हरड़ आदि आते हैं। कसैली चीजों के सेवन से मल विबन्ध, कब्ज, त्वचा के रंग में सुधार, व्रण का रोपण, जख्म का जल्दी भरना, आदि लाभ प्राप्त होते हैं। यह स्रावों को सुखाने वाला रस होता है। कसैली वस्तुएं अधिक खाने से मुंह का सूखना, पेट फूलना, अफारा, वजन कम होना, ठीक से मल त्याग न होना पेशाब कम होना, शुक्रक्षय दौरे पड़ना और पक्षाघात जैसे रोग हो जाते हैं। अब यह कहना आसान है कि किसी एक एक ही रस वाला भोजन रोग विशेष को आमंत्रित करता है, अतः भोजन की व्यवस्था इस प्रकार करनी चाहिए कि मीठे-खट्टे, नमकीन मिर्च-मसाले युक्त कड़वे कसैले सभी आहार द्रव्य इसमें सम्मिलित हो जाएं।

## रोगियों के लिए विशेष नियम

देखा गया है कि मधुमेह की दवाएं लेते हुए रक्तगत शर्करा कभी-कभी सामान्य से भी यह हो जाती है जो हानिकारक है। इसलिए यह कहना उचित है कि ऐसे व्यक्तियों में भी मधुर रस की जरूरत होती है, भले ही कम मात्रा में हो। इस प्रकार मधुमेह के रोगियों के लिए भी थोड़ा मीठा भोजन में शामिल करना जरूरी है।

शरीर में शर्करा का संतुलन, पैंक्रियाज से स्रावित होने वाले हॉर्मोन इंसुलिन पर निर्भर करता है। मधुमेह के रोगियों में इंसुलिन की मात्रा कम हो जाती है जिससे खाए गए मीठे पदार्थों का सम्यक पाचन नहीं हो पाता और रक्तगत शर्करा का स्तर बढ़ जाता है। यह भी वैज्ञानिक सत्य है कि इंसुलिन की प्रक्रिया विशेषतः शर्करा पर इंसुलिन की क्रिया नहीं होती। पुराना गुड़ और शहद कसैला होने के कारण भी मधुमेहियों के लिए उपयोगी बताया गया है। अधिकांश फलों में फ्रक्टोस शुगर पाई जाती है। इसलिए फलों का सेवन मधुमेहियों द्वारा भी किया जा सकता है।

इसमें भी अपवाद स्वरूप कुछ फल ऐसे हैं जिनमें शर्करा फ्रक्टोस नहीं होती, अतः ऐसे रोगियों को चीकू, अनानास, आम, अंगूर, केला इन फलों का सेवन नहीं करना चाहिए। उपयोगी फलों में अनार, सेब, आड़ू, सन्तरा, मौसमी आदि आते हैं यह न केवल सभी रसों में स्वाद बनाए रखने के लिए आवश्यक है वरन स्वास्थ्य हेतु भी अत्युपयोगी है।

## खट्टे पदार्थ कितने फायदेमंद

अनार, आंवला, इमली, नींबू, दही आदि खट्टी चीजें कही जाती हैं। खट्टे खाद्यान्न भोजन में स्वाद उत्पन्न करने वाले, भूख को बढ़ाने वाले, पाचन में सहायक, शक्तिवर्द्धक हृदय के

लिए लाभदायक ओर लाल स्राव को बढ़ाने वाले होते हैं। खट्टा अधिक खाने से सीने में जलन, खून की खराबी से होने वाले रोग, प्यास अधिक लगना और शरीर में सूजन आदि परेशानियां हो सकती हैं।

## कड़वे भोजन-पदार्थ कितने लाभदायक

हल्दी, करेला आदि तिक्त रस वाले (कड़वे पदार्थ) कहे जाते हैं। कड़वा भोजन पाचक रसों का स्राव बढ़ाने वाला, विषहर, कृमि नाशक पेट के कीड़ों को मारने वाला, खुजली दूर करने वाला, ज्वर/बुखार कम करने वाला, भूख को बढ़ाने वाला तथा स्तन्य शोधक होता है। कड़वी चीजों को अधिक खाने से सामान्य कमजोरी, बलक्षीणता, जोड़ों में दर्द और कृशता आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती है।

-प्रस्तुति : योगी अरूण

## जैसी करनी वैसी भरनी

एक बुढ़िया अत्यंत कंजूस थी। उसके यहां एक संन्यासी भिक्षार्थी रोज आता। बुढ़िया एक चुटकी आटा भी उसे नहीं देती। संन्यासी फिर भी आता रहता।

बुढ़िया ने तंग आकर सोचा, अब इस बाबे का तो नाम ही मिटाना होगा। यह सोचकर उसने चार जहर-मिश्रित लड्डू तैयार किये और बाबे को भिक्षा में दे दिये।

संन्यासी ने साश्चर्यभाव से लड्डू लिए और फिर खालूंगा इसी भावना से ले जाकर रख दिये।

रात के समय बुढ़िया के चार पुत्र विदेश यात्रा से लौटे। रात्रि अधिक व्यतीत हो जाने से उन्होंने घर न जाकर संन्यासी की कुटिया में ही रहने का निर्णय लिया।

चारों भूखे थे। उन्होंने संन्यासी से खाना मांगा। संन्यासी ने बहुत प्रसन्नता से चारों लड्डू उन्हें दे दिये।

चारों खाकर सो गये, परंतु सोकर वे उठे ही नहीं। संन्यासी ने चारों के विषय में पूरी-पूरी जानकारी करके सोचा, कि जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल मिलता है।

-प्रस्तुति : फरीद

## मासिक राशि भविष्यफल, दिसम्बर 2014

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

**मेष-** मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर शुभफल दायक है। सरकारी कर्मचारियों के लिये भी सन्तुष्टि दायक समय है। इस राशि के जातकों के लिए किसी नव निर्माण का प्रसंग आ सकता है। कुछ का रूका हुआ काम बनेगा। कार्यों में रूकावटें आएंगी किन्तु अन्ततः सफलता मिलेगी। मित्र मददगार होंगे।

**वृष-** वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अर्न्तविरोध के चलते सफलता देने वाला है कुछ खर्चा भी विशेष होगा। नये लोगों से मुलाकातें काम आयेंगी। राजनीति के क्षेत्र में इस राशि के जातक अपनी जगह बना पायेंगे। मित्रों से लाभ-होगा। किसी दूसरे के झंझट में न पड़े, अन्यथा नुकसान हो सकता है।

**मिथुन-** मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक आय तथा कम व्यय वाला है। कुछ जातकों का पिछला चला आ रहा ऋण भी चुकता हो जायेगा या रूका हुआ पैसा मिल जाएगा। विद्यार्थियों को भी अपने परिश्रम का सुफल मिलेगा। घर-परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। मेहमानों की आवा-जाही लगी रहेगी।

**कर्क-** कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभ-लाभ की स्थिति लिये रहेगा। घर परिवार में चल रहे विरोध को शान्त करने में काफी ऊर्जा का व्यय होगा। कुछ जातकों को नव निर्माण होने से खुशी मिलेगी तथा कुछ को लंबित पड़ी यात्राएँ पूरी होने की खुशी होगी। कुछ जातकों के यहां कोई अनुष्ठान आदि पूरा हो सकता है।

**सिंह-** सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अवरोधों के चलते परिश्रम साध्यलाभ देने वाला है। कुछ जातकों को अत्याधिक आर्थिक लाभ होगा किन्तु उन्हें पैसे का सही इस्तेमाल हो, यह सुनिश्चित करना पड़ेगा। कुछ नौकरी पेशा जातकों को पदोन्नति होने की खुशी हो सकती है। कुछ व्यवसायियों को नए अनुबन्ध मिल सकते हैं। इस राशि के जातकों को अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना होगा।

**कन्या-** कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिला कर शुभ फल दायक ही कहा जाएगा। व्यवसाय संबंधी कुछ यात्राएं भी होंगी जिनका सुफल मिलेगा। परिवार में छोटी मोटी कहासुनी होगी जो सुलझ जाएगी। मानसिक तनाव से छुटकारा मिलेगा। आप नए कपड़े खरीद सकते हैं। आप नई योजनाओं को अंजमा देंगे। कुछ जातकों को भूमि भवन का लाभ ही संभव है। लेन-देन संबंधी मामलों में सतर्कता बरतें।

**तुला-** तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का आदि तथा अन्त लाभकारी है तथा मध्य उतना लाभकारी नहीं है। वैसे आय और व्यय में संतुलन बना रहेगा। कुछ जातकों को लंबित पेड़ भूमि भवन के फैसलों का भी समय है जो इनके पक्ष में होगा। मित्रों और परिवार जनों में आपकी साख बनी रहेगी। सामाजिक कार्यों में जनता का सहयोग मिलेगा। कोई महत्वपूर्ण सूचना भी आपको इस माह खुशी दे सकती है।

**वृश्चिक-** वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह काग चेष्टा रखने का है। लाभ के अवसर को हाथ से जाने न दें। ऐसा लगेगा कि आर्थिक लाभ होगा किंतु यदि समय का सदुपयोग न किया तो हाथ में आता आता पैसा रूक जाएगा। कुछ सूचनाएं इस प्रकार भी मिलेगी। कि मानसिक चिंता बनेगी। कुछ जातकों के मुद्कमें आदि के फैसले के फलस्वरूप उन्हें लाभ हो सकता है। शत्रु सिर उठाएंगे।

**धनु-** धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम एवं संघर्ष के चलते अन्य लाभ देने वाला है। किसी के साथ हंसी-मजाक करते हुए अपनी सीमा को न लांघें। भौतिक वस्तुओं की खरीद की होड़ के चक्कर में न पड़े। इन जातकों के भूमि भवन संबंधी समस्या का कोई हल निकल आएगा। अपने बुजुर्गों का सम्मान करें तथा उनके स्वास्थ्य की अनदेखी न करें। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बनाए रखें।

**मकर-** मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। हां राजनीतिक लोगों को अधिक फायदा होगा। उनका वर्चस्व बढ़ेगा। शत्रु परास्त होंगे। घर परिवार में शांति व सामन्जस्य बना रहेगा। दाम्पत्य जीवन में कुछ कटुता आएगी किन्तु कोई हल निकल आएगा। ये जातक यात्रा तो करें पर इस माह पहाड़ी यात्रा न करें। ये जातक किसी भी वार्ता में अपशब्द बोलने से बचे अन्यथा हानि हो सकती है।

**कुम्भ-** कुम्भ राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। इस माह के आरंभ तथा अन्त में शुभ फल मिलेंगे तथा मध्य में मिश्रित फल मिलेंगे। सरकारी कर्मचारियों को उनके अधिकारियों की मदद मिलेगी। मुकदमें आदि में सफलता मिलेगी। जब अशुभ फल मिलेगा तो खर्चा अधिक होगा।

**मीन-** मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभफल दायक नहीं है। शरीर में अस्वस्थता के कारण कार्य में पूरा ध्यान नहीं दे पायेंगे, ऐसा लगता है। पीलिया, मलेरिया, आदि रोग घेर सकते हैं, कुछ लोग पेट की वजह से परेशान रहेंगे। ये जातक मुकदमे आदि में विजय प्राप्त कर सकते हैं। नौकरी पेशा जातकों का अपने अधिकारियों के प्रति रवैया अपतितजनक हो सकता है।

-इति शुभम्!

## ईमानदारी का सबूत

एक राजा अपनी प्रजा के हितों का बहुत ध्यान रखता था। वह गुप्तचरों से अपने राजकाज को लेकर, प्रजा की दशा को लेकर जानकारी लेता रहता था। एक दिन उसके गुप्तचर ने उसे बताया- आपके कर्मचारी कर वसूल करके उसमें से कुछ हिस्सा स्वयं रख लेते हैं, जिस कारण कर वसूली से प्राप्त सारा धन राज्य तक नहीं पहुंच पाता। जब राजा ने उन कर्मचारियों से इस बारे में पूछा तो वे बोले- महाराज! जनता पूरे कर ही नहीं देती। राजा को उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने मंत्री से कहा- ढिंढोरा पिटवा दीजिए कि कर वसूल करने के लिए एक योग्य अधिकारी की आवश्यकता है। जो स्वयं को इस योग्य समझते हैं वे राजमहल आएँ और परीक्षा दें। राजा की आज्ञा का पालन किया गया। अब आवेदक निश्चित समय पर राजमहल के सामने एकत्र हो गए तो राजा एक कमरे में जाकर बैठ गए। उस कमरे का रास्ता एक गलियारे से होकर जाता था। राजा ने मंत्री से कहा कि एक-एक करके लोगों को उस गलियारे में से राजा के सामने भेजें। जो भी राजा के सामने आता राजा उसे नाचने को कहते। लेकिन एक व्यक्ति को छोड़कर शेष सभी झिझक गए और बिना नाचे ही बाहर चले गए। बस एक व्यक्ति ने राजा के सामने जमकर नृत्य किया। राजा ने मंत्री से कहा- यही ईमानदार व्यक्ति है क्योंकि वह निर्भयतापूर्वक नाचा है। राजा की बात सुनकर मंत्री को हंसी आ गई। किसी तरह हंसी रोककर उसने पूछा- आपने यह कैसे पता लगा लिया कि यह ईमानदार है? राजा बोला- मैंने गलियारे में स्वर्ण मुद्राओं से भरे थाल रखवा दिए थे। इसको छोड़कर सभी ने अपनी जेबें स्वर्ण मुद्राओं से भर ली थी। यदि वे मेरे सामने नाचते तो उनकी जेबों से वे मुद्राएं गिर जातीं। इसलिए वे बिना नाचे ही चले गए। राजा ने उस ईमानदार व्यक्ति को कर वसूली की जवाबदेही सौंप दी।

## पूर्णता का रहस्य

पुण्डलीक माता-पिता का अनन्य भक्त था। उसकी इस भक्ति से भगवान प्रसन्न हुए और उसे दर्शन देने पहुंचे। उस समय पुण्डलीक के माता-पिता उसकी जंघाओं पर सिर टेककर सो रहे थे। भगवान को देख पुण्डलीक ने कहा, 'प्रभु' इस समय मेरे माता-पिता आराम से सो रहे हैं। मैं उनके आराम में विघ्न पैदा कर आपकी सेवा नहीं कर सकता। कृपया मुझे क्षमा करें। आप फिर कभी पधारें।' पुण्डलीक के इस उत्तर से भगवान अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया।

## अमृत-महोत्सव आयोजन का व्यापक स्वागत देह-दान/अंग-दान के लिए प्रशंसनीय प्रतिक्रिया

पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी के पचहत्तरवें जन्म-जयंती-वर्ष तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी के 80वें जन्म-जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में 14 दिसम्बर, 2014 रविवार, प्रातः दस बजे जैन आश्रम, नई दिल्ली में मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट द्वारा आयोजित अमृत महोत्सव के निर्णय का देश-विदेश के श्रद्धालु लोगों ने व्यापक स्वागत किया है इस अवसर पर राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि देश के विभिन्न प्रांतों से प्रतिनिधियों के आने की संभावना है। वहां नेपाल, अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, स्वीडन आदि से भी NRI प्रतिनिधि-जन पहुंच रहे हैं। जो लोग नहीं पहुंच पा रहे हैं वे फोन तथा ई-मेल आदि द्वारा अपनी वन्दना/मंगल भावना प्रकट कर रहे हैं।

इस समारोह में पूज्यवरों का आशीर्वाद लेने उत्तराखंड के राज्यपाल श्री अजीज कुरैशी समाज सेवी श्री पवन कुमार मधुजी बंसल, सांसद श्री महेश गिरी, श्रीमती ताजदार बावर, श्री फरहाद सूरी, समाज-सेवी श्री महेन्द्र सिंह जी डागा, समाज-भूषण श्री के.सी जैन, समाज-सेवी श्री रिखब चन्द जी जैने आदि महानुभावों के अलावा अनेक NRI व्यक्तियों की उपस्थिति भी रहेगी। देह-दान/अंग-दान के लिए भी समाज से पूरा उत्साह मिल रहा है। विदेश से आए मंगल-संदेशों में से कुछ हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

Jai Jinendra and thank you for your kind invitation.

I am delighted to know that you will be celebrating the 75th birth anniversary of Acharyashri in December. Acharyashri's tyaag and services has benefited many individuals, institutions and communities. Siddhachalam has had a long association with Acharyashri and I have personally had the pleasure of hosting him and having his guidance during the making of Shikharji at Siddhachalam. We remain indebted to him for his time, guidance and love for us.

Regretfully, we will not be able to attend the grand event.

Thank you and kind regards,

Jaipat Singh

**JAIPAT SINGH JAIN**

Vice Chairman & President

International Mahavira Jain Mission

Siddhachalam. 111 Hope Road, Blairstown, NJ 07825





## JAIN CENTER OF AMERICA

43-11 Ithaca Street, Elmhurst, NY 11373  
Website: [www.nyjca.org](http://www.nyjca.org) ~ e-mail: [Info@nyjca.org](mailto:Info@nyjca.org)  
Tel: (718) 478-9141 ~ Fax: (718) 478-9144

### BOARD OF TRUSTEE

Chairman  
Mr. Jawahar A. Shetti  
201 387 0577

Vice Chairman  
Mr. Mehul Shah  
917 864 0904

Secretary  
Mr. Robin R. Shah  
917 749 6892

Chief Financial Officer  
Mr. Sanjay K. Pandya  
917 660 7617

Trustees  
Mr. Cherryl Shah  
646 209 0469  
Dr. Dilip R. Mukhtyar  
718.823.2396  
Mr. Abhay Kothari  
516 314 6937  
Mr. Hemchand Bardia  
646 662 2694  
Mr. Sandeep Shah  
914 318 2141  
Mr. Vipul Shah  
917 593 6116  
Mr. Sunil Doshi  
917 863 6661  
Mr. Navneet Kothari  
631 586 1579

### EXECUTIVE COMMITTEE

President/Trustee  
Mr. Rajesh Shah  
646 361 3637

Vice President  
Mr. Nitin Ajmera  
516 849 1929

Administrator  
Mr. Mukesh Shah  
917 843 9089

Co-Administrator  
Mr. Kamlesh Shah  
646 645 1532

Treasurer  
Mr. Rajesh Shah(CPA)  
917 406 7593

Trustee  
Mr. Rajmohan Kothari  
917 535 7170

Members  
Mrs. Sampurna Jain  
718 812 7359

Mr. Ravikant Jargad  
718.564.9352

Mr. Swetal Varaiya  
917.514.6401

Mr. Snehal Shah  
917.319.2599

Mr. Hasmukhrai Shah  
347.517.7760

नवम्बर 16 2014

पद्म पुज्य आचार्य श्री रूपचन्द्रजी महाराज बा. ।

चरणों में भाविनय चन्दन।

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि मानव मंदिर मिशन की स्थापना  
तन ३३वां वार्षिक महोत्सव सडल्लास 14 दिनांकको मनाया जा रहा है। इस  
शुभ अवसर पर न्युयार्क जैन सेन्टर के सभी सदस्यों तथा पदाधिकारियों की  
हार्दिक शुभकामनाएँ बरीकार करें।

मानव मंदिर मिशन के माध्यम से जैन धर्म के विशाल सिद्धान्तों को एक नई  
धारा में प्रवाहित कर जिस तरह आपमें एक नया आदर्श स्थापित किया  
है उसके लिये हम सभी आपकी धारम्भार अनुमोदना करते हैं और शत शत  
चन्दन करते हैं।

मानव मंदिर मिशन जिन्हें दिन प्रणव गति से प्रवृत्ति करे इसी

मंगलकामना के साथ

आपका .....

राजेश शाह

President  
Jain Center of America, New York.



-उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल श्री अजीज कुरैशी जैन आश्रम, नई दिल्ली में पूज्यवर के साथ विचार-मंत्रणा करते हुए।



-जैन आश्रम परिसर में (दायें से) श्रीमती मधु बंसल, पूज्या साध्वीश्री मंजुलाश्री जी, पूज्य गुरुदेव, श्री पवनकुमार बंसल, माननीय राज्यपाल श्री अजीज कुरैशी, श्री मलहोत्रा जी, अरुण योगी, वैद्यराज सोहनवीर, सचिन दूबे एवं साध्वी वसुमती।

Very glad to know that celebration of 75th birthday of Acharya Shri Roopchandrajai Maharaaj is getting organized. We in North America are very happy to reciprocate. Maharaajshri has guided Jains in North America for more than 30 years with beautiful poetical pravachana that is nothig to compare. . He has also guided Vishwa Hindu Parishad and guided them to include Navkaar mantra in their Mangalam. He travelled to many cities in Dharma Yatra with many monks together. Roopchandrajai Maharaaj has personally guided most Jain centers during Paryushana/ Das Laxana and we are very indebted. We wish all success in the celebration..

With best wishes,

Nirmal Dosi  
Scholars Program in North America  
East Brunswick, NJ 8816-5302 USA